भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XVII (सत्रहवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 12 से 18 सितंबर, 2023 तक

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर					सितम्बर				
		08	09	10	11	12	14	15	16	17	18
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जींद						0	4	0	0	0
	सिरसा						0	0	0	0	4
	रोहतक	0	0	1	0	0	3	4	4	5	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, 112 से 150 दिन के पश्चात फसल बीजकोष खुलने की अवस्था में है। खेतों में खरपतवार देखे जा सकते हैं। कपास की चुनाई और कीटनाशकों का छिड़काव किया गया। 18-19 सप्ताह की फसल में कपास चुनने के लिए तैयार हैं। हल्की मिट्टी में उगाई जाने वाली कपास में नाइट्रोजन, जिंक और मैग्नीशियम की कमी के लक्षण देखे गए। अधिकांश क्षेत्रों में जैसिड की संख्या आर्थिक सीमा से काफी नीचे है। सफेद मक्खी की आबादी ईटीएल से ऊपर दर्ज की गई है और हिसार और फतेहाबाद जिलों के कुछ खेतों में सफेद मक्खी के कम से मध्यम संख्या में अंडे और निम्फल आबादी और कपास की पत्तियों पर हनी ड्यू के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। सभी सर्वेक्षण किए गए खेतों में फूलों और हरे गुलरों में ईटीएल से ऊपर गुलाबी सुंडी का प्रकोप देखा गया। कई खेतों में कपास की पत्ती मोड़ने वाली वायरल बीमारी, बोल सड़न, जड़ सड़न, सूटी मोल्ड और मायरोथेसियम/फंगल पत्ती धब्बा रोग देखा गया।

सिरसा में, 120-135 दिनों के पश्चात फसल बीजकोष बनने और बीजकोष खुलने की अवस्था में है। मौसम गर्म और शुष्क था। सिंचाई, उर्वरक प्रयोग और आवश्यकता आधारित कीटनाशक छिड़काव का कार्य हो चुका है। कुछ स्थानों पर सफेद मक्खी और जैसिड की आबादी ईटीएल को पार कर गई और कीटों की संख्या क्रमशः 5-36 और 2-15 / 3 पत्तियों के बीच है। हरे गुलरों की क्षति (**10-75%** के बीच) के आधार पर सभी स्थानों पर गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर गई। कपास के कुछ खेतों में जड़ सड़न और बोल सड़न की घटनाएं देखी गईं।

परामर्श:

हिसार में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी कपास की फसल में आवश्यकता के अनुसार आखिरी सिंचाई करें। कपास के पौधों में खुले हुए गूलरों की चुनाई करना शुरू करें। फसल अच्छे बीजकोष विकास बनने की अवस्था में है। इसलिए, अधिक उपज प्राप्त करने के लिए 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 (पॉटेश्यम नाइट्रेट) @2 किलोग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। इसके अलावा, हल्की मिट्टी में उगाई गई फसल में जिंक की कमी को दूर करने के लिए यूरिया 2.5% और जिंक सल्फेट 21% @ 0.5% और मैग्नीमशयम की कमी को दूर करने के लिए मैग्नीशियम सल्फेट @ 1 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। कपास की फसल में जहां फूल आना और बीजकोष बनना शुरू हो गया है, वहाँ फूलों और बीजकोषों में गुलाबी सूँडी के हमले के प्रति सतर्क रहें क्योंकि इस बार सर्वेक्षण किए गए सभी कपास के खेतों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण दर्ज किया गया था। गुलाबी सूँडी के वयस्कों की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। 3 दिनों के भीतर 24 वयस्क/जाल में आने पर, गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए कीटनाशक की आवश्यकता होती है। हरियाणा में कपास की फसल में गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए यह महीना बहुत महत्वपूर्ण है। गुलाबी सूँडी का संक्रमण ईटीएल जैसे कि, 5-10% रोसेट फूल या 5-10% संक्रमित गुलरों या 8 कीट प्रति जाल प्रति दिन लगातार 3 दिनों तक पार कर जाता है, तो बारी-बारी से कीटनाशकों जैसे कि प्रोफेनोफॉस 50 ईसी 600 मिली/एकड़ या क्विनालफोस 25 ईसी @ 400 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ 10 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 छिड़काव करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए कृत्रिम पाइरेथ्रोइड्स के संयोजन उत्पाद या टैंक मिश्रण का उपयोग न करें क्योंकि इससे सितंबर के पहले पखवाड़े में सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ जाएगा। सफेद मक्खी के निम्फ के गंभीर संक्रमण की स्थिति में, पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिली या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 240 मिली/एकड़ को 200 लीटर

पानी/एकड़ के साथ छिड़काव करें। मायरोथेशियम लीफ स्पॉट, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट जैसे पर्ण रोगों के प्रबंधन के लिए प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @0.3% या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% W/W + डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% W/W एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का पत्तियों पर छिड़काव करें। प्रारंभिक रोगसूचक जड़ सड़न से प्रभावित पैच और मुरझाने से प्रभावित कपास के खेतों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी से भिगोकर उपचार करें। प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डब्ल्यूपी @30 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/ली एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w +डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का उपयोग करके बोल सड़न रोग का प्रबंधन करें। कम से कम साप्ताहिक अंतराल पर नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें। पैराविल्ट के लक्षणों के मामले में, 24-48 घंटों के भीतर कोबाल्ट क्लोराइड 2 ग्राम/200 लीटर पानी/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे नियमित रूप से कीट-पतंगों की घटनाओं की निगरानी करें। जैसिड को नियंत्रित करने के लिए, डाइनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या एफिडोपाइरोपेन 50 ग्राम/लीटर @ 400 मिली/एकड़ और बाद में सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त रूप से तीन कीटनाशक डालें। केवल सफेद मक्खी की वयस्क आबादी को प्रबंधित करने के लिए, डायफेंथियुरोन 50% डबल्यूपी 200 ग्राम को 150-200 लीटर पानी में डालें या एथियन 50%ईसी @ 800 मिलीलीटर/एकड़ 3-5 दिन के अंतराल पर डालें। सूटी फफूंद के विकास के मामले में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @2.5 ग्राम/लीटर पानी के 2-3 रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दें। यदि गुलाबी सूँडी, हरे गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 500 मिलीलीटर या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @ 500 मिलीलीटर या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें । एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दुबारा छिड़काव की आवश्यकता हो तो , कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डब्ल्यूपी @30 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/ली एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w +डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का उपयोग करके बोल सड़न रोग का प्रबंधन करें।पैराविल्ट प्रबंधन के लिए, प्रभावित पौधों पर मुरझाने के लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद कोबाल्ट क्लोराइड @ 2 ग्राम/200 लीटर का छिड़काव करें, इसके बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम + 20 ग्राम यूरिया/लीटर पानी भिगोये। पत्तों पर फंगल धब्बों के प्रबंधन के लिए, क्रेसॉक्सिम-मिथाइल 44.3% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 मिली या एज़ोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 मिली/लीटर या पायराक्लोस्ट्रोबिन 20% एससी @ 1 मिली/लीटर या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 0.6 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) सितम्बर					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) सितम्बर				
		08	09	10	11	12	14	15	16	17	18
	अजमेर	0	0	0	0	0.5	2	1	1	2	1
	जोधपुर	0.7	0	0.4	0	0	0	0	1	1	0
	नागौर						0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	4	2	0
	श्री गंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, 77 से 125 दिन के पश्चात फसल, फूल आने और बीजकोष बनने की अवस्था में है। अधिकांश खेत खरपतवारों से मुक्त हैं क्योंकि समय पर अंतरकृषि क्रियाएं शुरू कर दी गई हैं। जैसिड को छोड़कर कीट और बीमारियों का कोई प्रकोप नहीं, लेकिन वह भी ईटीएल से नीचे है ।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, 100 से 155 दिन के पश्चात फसल गूलर बनने और गूलर फूटने की अवस्था में होती है। बुआई के बाद सिंचाई दी गई है। अगेती और समय पर बोई गई कपास में अंतरकृषि क्रियाएँ अपनाई गई हैं। खरपतवार हटाने के लिए हाथ से से निराई और गुड़ाई की गई है। ईटीएल के नीचे जैसिड और सफेद मक्खी जैसे रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप देखा गया है।

किसानों के खेतों में थ्रिप्स और गुलाबी सूँडी का प्रकोप ईटीएल को पार कर गया है।

परामर्श:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में बादल छाए रहने और हल्की बारिश होने का अनुमान है। रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें और यदि यह ईटीएल से आगे चला जाता है तो इसे नियंत्रित करने के लिए 5% नीम बीज गिरी अर्क (एनएसकेई) या एजाडिरेक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) @ 2.5 लीटर/हेक्टेयर या बुप्रोफेज़िन 25 एससी @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या एसिटामिप्रिड 20% एसपी @ 100 मिलीलीटर या डायफेंथियूरॉन 50 डब्ल्यूपी @ 600 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 200 ग्राम/हेक्टेयर का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की निगरानी के लिए 8/एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं और गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं और बताई गई वैधता के अनुसार लुयर बदलें। नियमित रूप से गुलाबी सूँडी की उपस्थिति की निगरानी करें और लार्वा सहित प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को नष्ट कर दें। गुलाबी सूँडी के लिए, घटना के स्तर को देखने के लिए 10-20 दिन पुराने 20 हरे गुलरों /एकड़ को काटें। यदि गुलाबी सूँडी फेरोमोन जाल में फंसने या हरे बोल क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @ 500 मिलीलीटर या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दुबारा छिड़काव की आवश्यकता हो तो , कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। यदि पौधों की पत्तियाँ अचानक गिरती हैं (पैराविल्ट) जो अंततः मुरझा जाती हैं, तो प्रभावित पौधों को कोबाल्ट क्लोराइड @ 2 ग्राम/200 लीटर पानी का छिड़काव करें तथा उसके पश्चात कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डबल्यूपी @2.5 ग्राम + यूरिया 20 ग्राम/लीटर पानी में या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @12 ग्राम + यूरिया 100 ग्राम/10 लीटर पानी में इन लक्षणों के दिखने के तुरंत बाद भिगोकर बचाएं। मायरोथेसियम, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट, गूलर सड़न रोग और आर्द्र मौसम ब्लाइट जैसे पर्ण रोगों के मामले में, प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% @30 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें। जड़ सड़न से प्रभावित पौधों और आसपास के स्वस्थ पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा हार्ज़ियानम या टी. विरिडी डब्ल्यूपी फॉर्मूलेशन @ 5 - 6 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ। एक ही कीटनाशक/कवकनाशी और एक ही समूह के कीटनाशक/कवकनाशी को दोबारा न दोहराएं। दो या अधिक कीटनाशकों के टैंक मिश्रण से बचें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे गूलर के गठन में सुधार और फूलों का गिरना कम करने के लिए पॉटेश्यम नाइट्रेट @ 2% का छिड़काव करें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। जैसिड और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए, एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़ या फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या क्लॉथियानिडिन 50 डब्लूडीजी @20 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी के निम्फ की संख्या अधिक है, तो पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नियमित रूप से गुलाबी सूँडी की उपस्थिति की निगरानी करें और प्रभावित फूल को लार्वा सहित नष्ट कर दें। जहां भी गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है, यानी फूल या गूलर का संक्रमण 5% से अधिक है, तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर					सितम्बर				
		08	09	10	11	12	14	15	16	17	18
	खरगाँव										
	धार	16	65	5.6	0	0					
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, फसल 77 से 126 दिन के पश्चात फूल आने और बीजकोष बनने की अवस्था में है। निराई-गुड़ाई, अंतरकृषि क्रियाएँ, सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग फसल के चरणों के अनुसार किया गया है। पिछले सप्ताह लगभग सभी इलाकों में व्यापक बारिश हुई थी इसलिए खेतों में सिंचाई की कोई जरूरत नहीं थी। खेतों में खरपतवार उग गए हैं। कई खेतों में जैसिड और एफिड्स का प्रकोप देखा गया जबकि कुछ खेतों में सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया। कुछ इलाकों में पोटैशियम की कमी दर्ज की गई है। कुछ खेतों में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट और सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट देखे गए।

परामर्श:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे 90 दिन पर 25% नाइट्रोजन डालें। पोटेशियम की कमी वाले क्षेत्रों में पोटेशियम सल्फेट

0.5% का छिड़काव करें। यदि कीटों की संख्या ईटीएल से ऊपर है (जैसिड 2 निम्फ/पत्ती, एफिड्स 10% संक्रमित पौधे और सफेद मक्खी 6/पत्ती) तो फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 200 ग्राम/हेक्टेयर या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 150 ग्राम/हेक्टेयर या थियामेथोक्सम 25 डब्ल्यूजी @ 100 ग्राम/हेक्टेयर का छिड़काव करें। गुलाबी सूँडी की गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। रोसेट फूलों की उपस्थिति का निरीक्षण करें और उन्हें इकट्ठा करके तुरंत नष्ट कर दें। यदि गुलाबी सूँडी ईटीएल से अधिक हो तो प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी/डब्ल्यूजी @25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें। यदि खेतों में अचानक सूखने या पैराविल्ट के लक्षण दिखाई दें, तो प्रभावित पौधों के चारों ओर तुरंत कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 12 ग्राम + यूरिया 1.5% डालें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या क्रेसोक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 10 मिली या प्रोपीनेब 70 डबल्यूपी @25 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन5% डबल्यूजी @20 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिलाएं एवं सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा, कोरिनेप्सोरा पत्ती धब्बा, अन्य फफूंद पत्ती धब्बों और फफूंद बोल सड़न रोगो के खिलाफ खेतो में पत्तियों पर छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप –केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप –केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।